शेखर रचित सांख्य योग

डॉ हिमांशु शेखर

डॉ हिमांशु शेखर की पुस्तक 'शेखर रचित सांख्य योग'

प्रथम संस्करण : 2021

(c) : डॉ हिमांशु शेखर

बंगला सं. 11, नेकलेस एरिया, आर्मामेंट कालोनी, पाषाण, पुणे -21

दूरभाष: 020-29514678 मोबाइल: 09422004678

ई-मेल : himanshudrdo@rediffmail.com

शब्द संयोजन, टंकण, मुद्रण, प्रकाशन : डॉ हिमांशु शेखर

Shekhar Rachit Sankhya Yog

A book of self written poetry by Dr Himanshu Shekhar

प्रस्तावना

श्रीमदभागवतगीता के दूसरे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने सांख्य योग पर चर्चा की है| मेरी उत्कट इच्छा होती थी कि कर्मयोग के रहस्यों को समझकर अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकूँ| इस दिशा में मुझे कई विद्वानों के संसर्ग से लाभ हुआ और मैंने सांख्य योग पर अपने शब्द इस पुस्तिका में संकलित किए है| इसका मूल उद्देश्य श्रीमदभागवतगीता के दूसरे अध्याय को लयबद्ध ढंग से हिन्दी कविता में पाठकों के सामने प्रस्तुत करना| इस प्रयास में सफलता तो अनिश्चित है, पर प्रयास करना ही कर्मयोग की आवश्यकता है| हरेक मानव के लिए कुछ कर्म नियत है, जिनसे कभी विमुख नही होना है| मुझे अपना युद्ध क्षेत्र ज्ञात नही है, न ही अपने तीर कमान, प्रत्यंचा का ही ज्ञान है| मैं कर्म करता रहता हूँ और फल को ईश्वर के अधीन मानता हूँ| तो प्रस्तुत है पाठकों की सेवा में अवलोकनार्थ एवं समीक्षार्थ “शेखर रचित संख्या योग”|

इसके दो भाग है| पहले भाग में द्वापर के अर्जुन और कृष्ण के संवाद को उद्धृत किया गया है और दूसरे खंड में कलयुग के अर्जुन के कुछ अनुत्तरित प्रश्न है| पाठक अगर कविता से जुड़ पाएंगे, तो कविता का आनंद ले पाएंगे| आशा है सकारात्मक आलोचना कर पाठक इसे अपना स्नेह देगे। धन्यवाद |

दिनांक : 20.07.2021 डॉ हिमांशु शेखर

स्थान : पुणे

- समर्पण -

कर्मठ मानवता को सादर समर्पित

- डॉ हिमांशु शेखर

डॉ हिमांशु शेखर की हिंदी पुस्तकें

सांख्य योग **06**

अर्जुन के प्रश्न **39**

1. सांख्य योग

अर्जुन बैठा रथ में उदास,

श्रीकृष्ण ना माने इसे त्रास,

हर युद्धभूमि में युद्ध आस,

हिंसा त्यागे तो गलत रास।

भगवन कहते हे वीर पार्थ!

परिवार, बंधुजन सभी खास,

आया सर पे जो वो स्वीकार,

अब नीति यही युद्ध अभ्यास।

समय नहीं, रिश्तों की आस,

ना श्रेष्ठ वीर का ये प्रयास,

इहलोग ग्लानि से पूर्ण रास,

परलोक ना सुधरे ये विश्वास।

अब त्याग मोह, होना तैयार,

सब युद्ध में शामिल हुए आज,

मन तन की जड़ता का विनाश,

बस युद्ध का ही बजता है साज।

स्पष्ट किया अर्जुन ने आज,

सब पूज्य बने शत्रु तमाम,

ये भीष्म द्रोण हैं गुरू समान,

बाणों पे उनका धड़ूं नाम।

लगता विपक्ष ही है वीरान,

ये पूज्य, गुरू, बंधु तमाम,

किनसे लड़ना मेरा है काम?

इसपर शंका होती तमाम।

इनको मारूं, तो गलत काम,

भोगूं सत्ता का सुख तमाम,

भिक्षा से आजिविका नाम,

लड़ना बेहतर ना है मुकाम।

दुविधा में डाले युद्धघोष,

करना, ना करना, असंतोष,

है जीत के सेहरे से अनजान,

मेरा, उनका, दोनों में दोष।

उनको मारूं जो मेरे प्रिय,

जीवन मेरा फिर हो व्यर्थ,

कल्याण न होता है सही,

ऐसे जीवन का नहीं अर्थ।

कायर हूं तो स्वीकार मुझे,

ये मोह नहीं, भटकाव लगे,

दुविधा का करना समाधान,

प्रभु आप मुझे अब नाव लगे।10।

सान्निध्य देव का प्राप्त हुआ,

राज्य प्राप्ति का कार्य हुआ,

पर युद्ध की सारी दुविधा में,

पद आपका ही आचार्य हुआ।

हे मधूसूदन! पूछूं मैं अब,

क्या मार्ग सही मेरा होगा?

दुविधा का होगा समाधान,

मन मुदित मधुर डेरा होगा।

भगवन ने तब प्रारम्भ किया,

उत्तर देकर के धन्य किया,

पण्डित कह संबोधन बोला,

अर्जुन को तब चैतन्य किया।

भगवन बोले तू ज्ञानी है,

फिर शोक करे बेमानी है,

ना प्राण गए या प्राण गए,

दोनों में शोक, हैरानी है।

ना लुप्त कोई हो जाता है,

हर काल में हर को पाता है,

ना मृत्यु किसी को छीनेगी,

हर जीव सदा रह जाता है।

हर जीव का ऐसा चक्र हुआ,

बालक, यौवन और वृद्ध हुए,

मृत्यु से नूतन तन मिलता,

तन त्याग किया समृद्ध हुए।

त्यक्त पुराना कर अम्बर

तन वसन ग्रहण करता नूतन,

हर मृत्यु आत्मा को देती,

मौका पाने का नूतन तन।

तन क्षणभंगुर, पर ये अव्यय,

ना मरे आत्मा, तन जो क्षय,

फिर कौन मारता है इसको,

ये गलत धारणा है ये तय।

शीत-ऊष्ण, सुख-दुख आए,

ये नाशवान, ये हुई नित्य,

इंद्रियों संग विषयों का मेल,

करता नाहक ये मन पे नृत्य।

बस सहन करो ये सब विषाद,

सुख दुख में रखना सम स्वभाव,

ये ध्यान रहे कि मोक्ष मिलेगा,

तब जब दुविधा से हो बचाव।20।

आत्मा अवध्य है अविनाशी,

समझो इसका सारा स्वरूप,

यह हुई नित्य, यह अप्रमेय,

अदृश्य है होती जैसे धूप।

सर्वव्याप्त यह सत समान,

ना असत फलेगा ऐसा मान,

सत की सत्ता का कर गुमान,

हे पार्थ! आत्मा बनी जान।

ना मृत होती ना मृत करती,

आत्मा का ऐसा है राज,

अज्ञानी कहते सही मगर,

मूढमति ना बन तू आज।

ये है अजन्मा, ये मृत्युजीत,

आत्मा चिरजीवी है पुनीत,

ये हुई सनातन नित्य साथ,

ये सदा पुरातन गाओ गीत।

ना शस्त्र आत्मा को काटे,

ना पावक दग्ध ही कर पाए,

ना नीर इसे नम कर पाए,

ना वायु शुष्क ही कर पाए।

आत्मा अभेद्य, अदाह्य हुई,

अक्लेद्य, अशोष्य, सनातन है,

ये सर्वव्यापी, ये नित्य, अचल,

स्थिर स्वरूप, ये पुरातन है।

आत्मा अव्यक्त, अविकारी सदा

ये है अचिंत्य, संज्ञान करो,

यदि ज्ञात आत्मा का गुण तो,

फिर शोक नहीं संधान करो।

यदि आत्मा पाती जन्म मृत्यु,

तो भी ये शोक ना पोषित है,

ये गलत धारणा हो सकती,

पर व्याख्या इसकी घोषित है।

जिसने पाया है जन्म उसकी,

मृत्यु होनी भी अंकित है,

जो मौत को प्राप्त हुआ उसकी,

जन्म हुई सुनिश्चित है।

ये चक्र जन्म और मृत्यु का,

अनवरत ही चलता रहता है,

और शोक तुम्हारा इसमें भी

गलत ठहर कर रहता है।30।

जन्मपूर्व और मृत्योपरांत,

तनहीन आत्मा का विचरण,

बस जन्म से मौत की यात्रा में,

इसको मिलता हो कोई तन।

ना देख रहा तू आत्माएं,

तू देख रहा है केवल तन,

जो शाश्वत है उसको त्यागा,

नश्वर का तू कर आलम्बन।

सोच यही कि आत्माएं,

या हैं अवध्य या चक्रलीन,

ना मरती तो है शोक व्यर्थ,

या नियति मान हो युद्धलीन।

हे सव्यसाची! हे धनुर्वीर!

आत्मा वास्तव में बने जीव,

तू छोड़ मोह, तू समझ इसे,

बस प्रखर तीर से युद्ध नींव।

क्षात्र धर्म के पालन से,

क्षत्रिय कहे जाते है वीर,

गर धर्म विमुख होते हैं तो,

क्यों लटका अक्षय तूणीर?

धर्मच्युत हों या कर्मच्युत,

गौरव खण्डित हो जाता है,

इहलोक में कहते हैं कायर,

परलोक बिगड़ ही जाता है।

स्मरण करो कर्तव्य पार्थ,

क्षत्रिय युद्ध ना करे आज,

भयभीत हुआ प्रचार करें,

और तुच्छ गिनेगा ये समाज।

कल्याणकारी दूजा न आज,

बस युद्धलीन हो करो नाज,

ये उचित धर्म का बना मार्ग,

अनुगमन करो और बनो बाज।

हो भाग्यशाली कि युद्ध आज,

मौका किस्मत से मिला आज,

लड़ना ही केवल है विकल्प,

अपमान करे थूके समाज।

युद्ध विमुख को पाप मान,

ये नहीं पुण्य, ना है ये शान,

स्वधर्म, कीर्ति की हानि है,

बस युद्ध ही मांगे ये जहान।40।

ना युद्ध किया, इसका प्रचार,

होगा अनंत तक, ये विचार,

सम्मानित ना अर्जुन सुनाम,

जग में अपकीर्ति हो अपार।

संदेह वीरता पर होगा,

भय से छोड़ा ये युद्ध कहें,

ना महारथी रह पाएगा,

लघुता के आएंगे लम्हे।

निंदा, अपमान सहेगा तो,

जीवित ही मौत को पाएगा,

तन क्लेश से पूरित घट होगा,

आत्मा में दुख भर जाएगा।

ये युद्ध नहीं है हनन, पाप,

ये क्षात्र धर्म, ये है विश्वास,

अर्जुन अब ये शुरुआत हुई,

कर युद्ध ठान, शत्रु विनाश।

ना लाभ-हानि, ना सुख-दुख है,

ना जीत-हार इसका निदान,

ना कारण खोज क्यों युद्ध करूं?

बस युद्ध धर्म है, युद्ध ठान।

यदि मरता है तो स्वर्ग लाभ,

जीतेगा तो धरती पे राज,

दोनों में लाभ तुम्हारा है,

बस युद्ध ठानकर, गिरा गाज।

ये ज्ञान, तर्क देता फिरता,

लगता पंडित से ही कहता,

ज्ञान की परिणति ही ऐसी,

कि कर्म विमुख ना है रहता।

बुद्धि, तर्क, तब तक सुनना,

पर कर्म जरूरी होता है,

तुझसे कहता हूं, कर्म करो,

तू कर्म के बीज न बोता है।

कर्मयोग पालन पुनीत,

स्थिर बुद्धि इसका प्रतीक,

अस्थिर है तो अविवेक,

सकाम रहें, तो ना है ठीक।

केन्द्रित बुद्धि करना विचार,

भटके मन ऐसी ही पुकार,

परमात्मा में होना विलीन,

विस्मृत करता है ये संसार।50।

भोग लिप्त होना व्यापार,

फल चिन्ता करते अपार,

स्वर्ग प्राप्ति जीवन उद्देश्य,

ऐसों का ना होता उद्धार।

वाणी से शोभा है जग में,

वर्णन करती है ये अखण्ड,

चाहें हैं भोग और ऐश्वर्य,

जिनको पाना ना कोई दण्ड।

ऐसा वर्णन तो, पाने की,

सुनकर इच्छा होती जागृत,

निश्चय करने में हो विलम्ब,

बुद्धि होती इससे है मृत।

आसक्ति हीन बनना है ठान,

तू त्याग हर्ष और शोक द्वंद,

वाणी प्रभाव को काट सदा,

बुद्धि को ना करना तू मंद।

अप्राप्य प्राप्त तो कहें योग,

हो क्षेम, रक्षा करते जो प्राप्त,

ये योग क्षेम परमात्मा का,

ना चाहे लेकिन वो है व्याप्त।

स्वाधीन करें अंतःकरण,

ऐसी पालन कर शिक्षा,

बुद्धि स्थिर कर ले रहे,

सब कर्मयोग की भिक्षा।

वृहत जलाशय प्राप्त कर,

ज्यों लघु ना है भाया,

ब्रह्म तत्व को जानकर,

व्यर्थ वेद की माया।

कर्म पे है अधिकार पर,

फल स्वतंत्र है काया,

फल की चिंता व्यर्थ है,

ना कर्म करे तो माया।

आसक्ति को त्याग कर,

सिद्ध असिद्ध समान,

समभाव यही समत्व तो,

योग की ये है जान।

तुच्छ ज्ञानी जन कह रहे,

सकाम कर्म का नाम,

फल की चाहत जो करें,

बने दीन बदनाम।60।

समबुद्धि से रक्षा का ही,

सद मार्ग प्रशस्त करेंगें,

बुद्धि योग आश्रय से ही,

जग को आश्वस्त करेंगे।

त्यक्त हुआ इहलोक में

पाप पुण्य का फेर,

कर्मबंध से मुक्त हुए जो,

पुरूष वही हैं शेर।

समबुद्धि से युक्त ज्ञानी,

फल का ना लें संज्ञान,

जन्म रूप के बंधन से,

मुक्ति पा बने महान।

मोहरूप दलदल इससे,

बुद्धि जब तर जाएगी,

भोग सभी लोकों की,

वैराग्य से ही भर जाएगी।

विचलित बुद्धि स्थिर होकर,

सुनने से जब करे वियोग,

अचल हुई, नियत होकर तब,

परमात्मा से करे संयोग।

अर्जुन बोला, कि हे केशव!

स्थिर बुद्धि का करें बखान,

मैं भी समझूं कैसा बनना,

अनुसरण करूं कैसा विधान?

केशव के वचनों में ज्ञान,

सुनना थोड़ा देकर कान,

त्याग कामना का करते जो,

स्थिर बुद्धि उसको ही जान।

आत्मा है संतुष्टि जान,

इसका रखो पूरा ध्यान,

इसमें ही, इससे ही रहना,

स्थितप्रज्ञ की ये पहचान।

सुख आए तो नहीं गुमान,

दुख से चिंतित ना विद्वान,

रोग, क्रोध, भय जीत चुका,

स्थिर बुद्धि है वही महान।

शुभ अशुभ में एक समान,

राग, द्वेष ना करे जो ठान,

बुद्धि है स्थिर तो लगता,

सुख दुख दोनों एक समान।70।

इंद्रियां जिनकी वश में जान,

भटक न पाए मन यह भान,

कछुए जैसे सिमट गईं जब,

स्थितप्रज्ञ वो सिद्ध महान।

ग्रहण नहीं जो करे प्रदान,

वाह्य विषय ना होता दान,

इंद्रियां नियंत्रित होती हैं तो

वश में कर लेना आसान।

आसक्ति मुक्ति से शान,

बुद्धि भटकती तो नादान,

स्थिरता भी भंग हो रही,

आसक्ति से ना कल्याण।

आसक्ति बनती बलवान,

जीत ना पाता जो इंसान,

बुद्धिमान का बुद्धि हरण

हो जाता बिल्कुल आसान।

चक्र चतुर्दिक है ये जान,

आसक्ति से सब हैरान,

वाह्य विषय पर चिंतन से,

व्यर्थ हुई स्थिरता मान।

विषयों से ना हो उत्थान,

आसक्ति का दिया मचान,

आसक्ति से बढे कामना,

विघ्न पड़ा तो क्रोध विधान।

क्रोध बढे तो मूढता जान,

स्मृति में भ्रम का संज्ञान,

भ्रम से बुद्धि नष्ट हो गई,

स्थिर बुद्धि ना ये विद्वान।

अंतःकरण पर दें ध्यान,

वश में हो पहला पायदान,

राग द्वेष से ऊपर उठकर,

करें प्रसन्नता का संधान।

हुए प्रसन्न तो कर गुनगान,

दुख से मन होता अनजान,

परमात्मा में लीन हुए तो,

चित्त स्थिर है करो बखान।

कर्मयोगी बनना ये ज्ञान,

नियत करना कर्म विधान,

लक्ष्य एक नियत कर लेना

कर्म उसी पे केन्द्रित जान।80।

मन ना जीते तो हो ज्ञान,

इंद्रियों के कई अनुसंधान,

निश्चित ना बुद्धि होती तो,

अनुपयुक्त है वो इंसान।

अनुपयुक्त का सुनो बखान,

भावना ना वो पाए जान,

बिन इसके ना मिले शान्ति

सुख पाना भूलो इंसान।

वायु नियंत्रण का संज्ञान,

इंद्रिय को वायु ही मान,

बुद्धि नौका, इंद्रिय नियंत्रित,

दिशा पा रहा हो जलयान।

मन हरने का गलत विधान,

इंद्रियों को ना छूट हो ठान,

इंद्रियों पर हो सही नियंत्रण,

स्थिरप्रज्ञ तब बने विद्वान।

सांसारिक सुख है नाशवान,

इनको रात्रि सम देना मान,

ज्ञान रूप परमानंदित हों,

परमात्मा का तत्व है जान।

स्थितप्रज्ञ को समुद्र ही मान,

ज्यों नदी मिलती यही विधान,

ना समुद्र को विचलित करते,

मिलन का सारे गाते गान।

भोग में ना विचलित इंसान,

ना विकार का कहीं भी भान,

परम शान्ति को प्राप्त करेगा,

स्थितप्रज्ञ की ये है पहचान।

त्याग कामना, ममता, आन,

शान्ति मिले स्पृहा बलिदान,

ब्रह्म मिले पर मोह नहीं तब

ब्रह्मज्ञान इसको ही मान।

अर्जुन बस लो इसका संज्ञान,

मोह, आसक्ति का बलिदान,

निश्चित, केन्द्रित बुद्धि हो तो,

कर्म से ना भटको विद्वान।

सांख्य योग बस इतना ज्ञान,

कर्म करो जो लिखा विधान,

स्थिर बुद्धि का परिचय मांगे,

हे अर्जुन! कर शर संधान।90।

2. अर्जुन के प्रश्न

अर्जुन लेने को ज्ञान चला,

रणभूमि में हो युद्ध विमुख,

माधव को सुनने को आतुर,

श्रोता बन जाने का ले सुख।

समझाते थे भगवान प्रखर,

तू युद्ध ही कर, हे धनुर्वीर,

दर्शन, शास्त्रों का आलम्बन,

हो शान्त चित्त, ना हो अधीर।

शंका सुनकर, दे समाधान,

हर प्रश्न का उत्तर था प्रस्तुत,

द्वापर का अर्जुन समझ गया,

था कलयुग का करता कौतुक।

अब पूछ रहा अर्जुन ऐसा,

हे माधव! मैं भटका राही,

क्यों कर्म जरूरी होता है,

भवितव्य घटित तो होगा ही।

हर बार आत्मा की चर्चा,

होती है, पर अदृश्य हुई,

हम आत्मा हैं या हैं तन ये,

मन की दुविधा भी दृश्य हुई।

किसके कारण ये युद्ध अभी?

तन आत्मा दोनों की टक्कर,

ना तन मैं हूं, ना आत्मा हूं,

किसने ठाना है, ये चक्कर?

हे मधुसूदन! ये तन है वसन,

ना मोह करे जो तन का हम,

पर हुई आत्मा निर्मोही,

तो फिर सत्ता का क्यों हो गम?

रिश्ते सारे बेकार हुए अब,

कर्म धर्म का मर्म खतम।

ये सब तो तन की माया है,

तो चले कमण्डल लेकर हम।

रिश्तेदारों की मार धार मे,

पक्ष विपक्ष का है मिश्रण,

तन आत्मा का स्थुल स्वरूप,

जो है विपक्ष, उनका है हनन।

आप कह रहे, युद्ध करो तो

स्वर्ग मिले या राजयोग,

पर बंदी सा जीवन संभव,

या लिख रखा हो नरकभोग।10।

ये युद्ध नहीं है समाधान,

इससे तो केवल हो हानी,

जो हार गए वनवास पुनः,

जीते तो बदलेगी रानी।

जीवन ना सत्ता के कारण,

बिन सत्ता के जीना सीखा,

अब तक के जीवन में भटका,

अब महल से टीस उठे तीखा।

जो भाग्य में है, वो मिलता है,

फिर कर्म मार्ग पर व्यर्थ भ्रमण,

इसलिए अगर हो भाग्य प्रबल,

तो भोग सुखों को करे रमण।

भक्ति शक्ति या भाग्य प्रबल,

दुविधा ले आया ज्ञान सकल,

हर एक को आप कहे उत्तम,

पर चुनने में दिल है विकल।

ना कर्ता मैं, ना कर्म सही,

औचित्य नहीं कोई ज्वलंत,

फिर मेरे तीरों से क्यों

आच्छादित करना है दिगंत?

हम सब केवल कठपुतली हैं,

कोई और डोर ले बैठा है,

बेकार हुआ सारा कौशल,

जो सव्यसाची बन ऐठा है।

जब लक्ष्य सुनिश्चित पहले है,

बेकार धनुर्विद्या का ज्ञान,

मैं बेमलतब श्रम करता था,

ये लक्ष्यभेद का व्यर्थ गान।

जिनको मरना मेरे हाथों,

मरते ही वो, ये देते ज्ञान,

फिर विद्या अस्त्रों का सारा

व्यर्थ फैलता यहां विधान।

हर बार कल्पना करनी है,

दुर्योधन का कोई निदान,

निर्धारित जो कर रखा है,

वास्तविक बनाने का बयान।20।

मैं युद्ध करूं, भवितव्य यही,

लिखा पहले सुनना ये ज्ञान,

सुनकर भी जो ना युद्ध करूं

तो भविष्य बदले भगवान।

भवितव्य अगर निश्चित है,

तो पाप पुण्य हो लुप्तप्राय,

हो नरक स्वर्ग दोनों व्यर्थ,

कह रहा यही हर संप्रदाय।

तय करता कोई और यहां,

फल पाता है प्राणी दूजा,

ये खेल करे नियति इसमें,

कैसा फल और कैसी पूजा?

हे केशव! सुनना नियति है,

मैं बैठा सुनने को उपदेश,

जीवन के सारे राज सुनूं,

भवितव्य का ऐसा है संदेश।

अर्जुन की सुन शेखर कहता,

हे कृष्ण! अपेक्षा बढती है,

कलयुग में ईश्वर पर शंका

की, चादर देखो चढती है।

बिना पढे ही मुफ्त ज्ञान

की चाह यहां पर बढती है,

खुद ईश्वर भी आए तो भी

जिरह ज्ञान बन बढती है।

लेखक परिचय

डॉ हिमांशु शेखर, वैज्ञानिक जी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के आयुध और समाघात अभियांत्रिकी महानिदेशालय में निदेशक (परियोजना अनुवीक्षण) है|

Dr Himanshu Shekhar, Sc 'G', is Director (Project Monitoring) at the office of Director General (Armament and Combat Engineering) of DRDO.

Academic Achievements (शैक्षणिक उपलब्धियां)
Mechanical Engineering (यांत्रिकी अभियांत्रिकी) में Ph.D.
IIT, Kanpur M.Tech में CPI = 10.00
GATE 91 Score : 99.57 percentile
First class first (85.13%) with distinction in Graduation
First class (80.00%) with distinction in Intermediate
Merit scholarship during Inter, Graduation and M.Tech

Publications (प्रकाशन)
Technical Books : 20 in English, 16 in Hindi
Journal Articles : 65, Conference publications: 59
Invited talks: 92, हिंदी में तकनीकी आलेख: 89

Awards and Recognitions (पुरस्कार और पहचान)
साहित्यकार संसद से 2003 आचार्य रामनरेश त्रिपाठी शिखर साहित्य सम्मान
DRDO से 2010 में 'राकेट रहस्य' पुस्तक के लिए राजभाषा पुस्तक पुरस्कार
Agni Award for Excellence in Self-Reliance 2001
Young Scientist Award 2004
Mr Engineers – 2003 from Institution of Engineers (India)
National Science Day Oration Award – 2003
Editorial Board of Central European Journal of Energetic Materials and Bioglobia
Science day awards, Technology day awards, Safety day awards, हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कार आदि

Professional Competence
Rocket propulsion, Gun propulsion, Pyrotechnics, Explosive Science, Ballistic Prediction, Structural Integrity analysis, Modeling and Simulation of Armament Systems, Mathematical tool development, ...